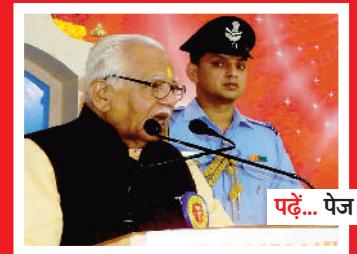




पढ़ें... पेज 03

शिव आमंत्रण



पढ़ें... पेज 06

वर्ष: 5, अंक: 12

RNI: RJHIN/2013/53539

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

हिन्दी (मासिक), 2017, दिसंबर, सिरोही, पृष्ठ: 12, मूल्य: 7.50 रुपए

जो कार्य 193 देशों में फैला संयुक्त राष्ट्र संघ नहीं कर सका, वह 137 देशों में फैली ब्रह्माकुमारीज ने कर दिखाया: सोलंकी

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

ब्रह्माकुमारी संस्था के 80 वर्ष पूर्ण होने पर चंडीगढ़ में आयोजन

शिव आमंत्रण ■ चंडीगढ़

ब्रह्माकुमारीज संस्था के 80 वर्ष पूर्ण होने पर पंजाब जौन के क्षेत्रीय मुख्यालय चंडीगढ़ सेक्टर-33 में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें पांच प्रदेशों से हजारों लोग शामिल हुए। सम्मेलन में समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को सम्मानित भी किया गया।

समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पंजाब-हरियाणा के राज्यपाल कपासन सिंह सोलंकी ने कहा कि 193 देशों में फैला संयुक्त राष्ट्र संघ जो कार्य नहीं कर सका वह 137 देशों में फैली ब्रह्माकुमारीज संस्थान ने कर दिखाया है। आज रिफॉर्म की नहीं, बल्कि



कार्यक्रम में राज्यपाल कपासन सिंह सोलंकी द्वारा समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वालों नागरिकों का सम्मान किया गया।



सम्मेलन में उपस्थित गणमान्य नागरिक।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की जरूरत है जो उन्होंने कहा कि आज समाज में तपाम मतांतर है। इससे कई बार आपसी तरह की धारणाएं, विचार और मत-सौहार्द बिगड़ने की संभावना रहती है।

लल



जीवन का लक्ष्य है शांति और आनंद की प्राप्ति

...पेज 12



विश्व में नारी शक्ति ही ब्रह्मणी परिवर्तन का बिशु, ब्रह्माकुमारियों ने असंभव को ...पेज 08

सोलंकी पांच से बिजली की कर रहे बधत...
...पेज 3

80 वर्ष का बताया सफर...

ब्रह्माकुमारीज, मैडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा ने कहा संस्था 80 वर्ष से देश व समाज के सभी वर्गों में मूल्यनिष्ठा के लिए लगातार प्रयास किए हैं। वर्ष पंजाब जौन के निदेशक बीके अमीरचंद ने भी संस्था के कार्यों पर प्रकाश डाला। संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, शातिवल प्रबंधक बीके भूपाल और मलेशिया के सेवाकेन्द्रों की निदेशिका बीके मीरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ए.एन जिंदल, भाजपा चंडीगढ़ के अध्यक्ष संजय टंडन, केडीडीएन घेयरमेन राजेन्द्र कुमार साबू भंडारे वाले पीजीआई के जगदीशलाल आहुजा, सुप्रियसिंह एथलीट गुजरावान सिंह सिंद्ध मेयर आशा जायसवाल ने भी अपनी शुभकामनाएं दी।

हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा: राज्यपाल सोलंकी

जातीवाद, आतंकवाद और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर राज्यपाल सोलंकी ने कहा यदि इसे निटाना है तो अपने आपको ट्रांसफार्म करना होगा। हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा और सुधरेंगे का एक ही रस्ता है स्वयं को परमात्मा से जोड़ें। इसी स्रोत और ज्ञान को लेकर ब्रह्माकुमारीज संस्थान 80 वर्ष से चल रहा है। पंजाब जौन की प्रभारी बीके उत्तरा, आवास-निवास प्रभारी बीके देव, हरीनगर दिल्ली की प्रभारी बीके शुक्ला समेत अन्य गणमान्य नागरिकों ने भी सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त किए।

राज्यपाल सोलंकी ने कहा धारणा का मतलब सृष्टि और समाज को जानिए, तभी हम खुद जीएंगे और दूसरों को जौने का भाव पैदा कर सकेंगे। मूल्यों को देश की दैवी संपदा बताते हुए कहा कि जब हर एक व्यक्ति इसे जीवन में अपनाएगा तो सभ्य समाज स्वतः बन जाएगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर झांक कर इसका अवलोकन करे कि यह हमारे भीतर है या नहीं।

सुन्नी में 'चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन'

चरित्र निर्माण से बनेगा स्वस्थ समाज



संस्थान के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हि.प्र. के राज्यपाल आचार्य देवव्रत व पंजाब जौन के निदेशक बीके अमीरचंद, बीके ऊपा व अन्य अतिथि।

शिव आमंत्रण ■ सुन्नी

उन्होंने कहा ब्रह्माकुमारीज के आध्यात्म की शक्ति चरित्र निर्माण के साथ व्यक्तित्व को ऊंचा कर देती है। चरित्र निर्माण से ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। उक्त उद्गार हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने व्यक्त किए। सुन्नी में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया।

शेष पेज 08 पर...



प्रतीक्षालय का उद्घाटन करते रेल राज्यमंत्री मनोज सिंह व अन्य अतिथि।

मंत्रालय के बीच एमओयू किया गया। इसके तहत स्वच्छता और अन्य कई सुविधाओं का खर-खराव संस्थान ने कहा रेल मंत्रालय ने कुछ वर्षों से राजस्थान के लिए बहुत कार्य किया है। इसी कड़ी में आबू रोड स्टेशन को लेकर ब्रह्माकुमारी संस्था और रेल

संस्था के कार्यकारी सचिव बीके

योग और ध्यान से पूरी दुनिया में बढ़ा भारत का मान

शांतिवन में रेल राज्यमंत्री मनोज सिन्हा बोले...

शिव आमंत्रण ■ आवश्यक

आबू रेलवे स्टेशन पर यात्री प्रतीक्षालय का उद्घाटन करने के बाद केंद्रीय रेलराज्य व संचार मंत्री मनोज सिन्हा ने संस्थान के शांतिवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। करीब 20 हजार से अधिक भाई-बहनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा भारत की प्राचीन पद्धति, राजयोग और ध्यान ने पूरे विश्व में एक

माहौल पैदा कर दिया है। इससे भारत का मान बढ़ा है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान केवल योग ही नहीं बल्कि सभ्यता क्षेत्रों में अहम योगदान कर रही है। मुख्य प्रशासिका दादी जानकी से मुलाकात कर उन्होंने कहा योग का ही कामाल है कि दादी जानकी 102 वर्ष की उम्र में भी एक्टिव है। नारी शक्ति का केन्द्र यह संस्थान पूरी दुनिया में मानवता का संदेश दे रहा है।



रेल राज्यमंत्री मनोज सिन्हा को ईश्वरीय सौगत देते राजयोगिनी दादी जानकी।

'मेरा भारत, स्वर्णम् भारत' अभियान... मुख्यालय में किया भव्य स्वागत

शांति का पैगाम लेकर निकली पीस मैसेंजर बस

शिव आमंत्रण ■ आवश्यक

गुजरात के अहमदाबाद से 13 अगस्त को निकला राष्ट्रीयी बस अभियान आबू रोड पहुंचा। ब्रह्माकुमारीज संस्था के युवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'मेरा भारत, स्वर्णम् भारत' अभियान का शांतिवन में संस्था के पदाधिकरियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इसके पश्चात गांव-गांव में लोगों को स्वच्छता, साक्षरता, महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ, पर्यावरण जागृति तथा नशामुक्ति के प्रति जागरूक किया गया।

युवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने रेन्डर मोदी का सपना है हमारा देश स्वच्छता के क्षेत्र में पूरी दुनिया में नाम रोशन करे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अभियान का शुभारम्भ किया गया है। जो तीन साल तक भारत के अधिकतर शहरों में लोगों को जागरूक करने का प्रयास करेगा।

संस्था के महासचिव बीके निर्वर्ण ने



हरी झंडी दिखाकर रवानगी करते अतिथि।

कहा भारत में जब युवा जग जायेगा तभी भारत स्वर्ग बन जायेगा। इसके लिए युवाओं में जागृति लाने की जरूरत है। युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजक बीके चन्द्रिका ने कहा आज युवाओं में तेजी से नशे की लत बढ़ती जा रही है। ऐसे में जरूरत है कि उन्हें इसके प्रति आगाह करें। यदि समय रहते हमने ऐसा नहीं किया तो आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। युवा प्रभाग के बीके जीतू, बीके भानू, बीके मोहन, बीके धीरज, अनूप सिंह, बीके अमरदीप, बीके अवतार, बीके गीता समेत कई लोग उपस्थित थे।

प्रकाश, शांतिवन के अभियन्ता बीके भरत, इंजीनियर विंग के प्रमुख मोहन सिंघल, शांतिवन प्रबंधक बीके मुनी, ईशु दादी, ज्ञानमृत के प्रधान सम्पादक बीके आत्मप्रकाश आदि ने अपने विचार व्यक्त कर अभियान में शामिल यात्रियों को शुभकामनाएं दी। इस दौरान युवा प्रभाग के बीके जीतू, बीके भानू, बीके मोहन, बीके धीरज, अनूप सिंह, बीके अमरदीप, बीके अवतार, बीके गीता समेत कई लोग उपस्थित थे।

तीन साल तक चलेगा अभियान

मेरा भारत, स्वर्णम् भारत अभियान तीन साल यानी 2020 तक भारत के कोने-कोने करीब एक हजार शहरों में लोगों में जागृति लाएगा। साथ ही करीब दस हजार से ज्यादा कार्यक्रम किए जाएंगे।

लोगों को इसके बारे में कर रहे जागरूक

अभियान में स्वच्छता, बेटी बचाओ, महिला सशक्तिकरण, नशामुक्ति, जल स्वाबलंबन, साक्षरता, सामाजिक कुरीति उच्चमूल की जागृति के लिए चित्र प्रदर्शनी लगाई गई है। साथ ही युवाओं को नशे के दुष्प्रियाम बताए जा रहे हैं, ताकि वह इससे दूर रहें। इसमें लगे चित्र आकर्षण का केन्द्र हैं।

अंबाला में डायमंड जुबली महोत्सव

हरियाणा के खेल एवं युवा विभाग मंत्री अनिल विज ने कहा-

जीवन का लक्ष्य शांति और आनंद की प्राप्ति



अंबाला के दयालबाग सेवा केंद्र की डायमंड जुबली पर केक काटते अतिथि।

शिव आमंत्रण, अंबाला। मानव जीवन का लक्ष्य शांति और आनंद की प्राप्ति करना है। जिसकी अर्थात् एकमात्र परमपिता परमात्मा है। उन्होंने इसका पेटेंट करके रखा है। इसकी डिस्ट्रीब्यूटरशिप ब्रह्माकुमारीज संस्थान को दी है, जिसका प्रमाण प्रत्येक ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमार के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देता है।

उक्त उद्धार हरियाणा के स्वास्थ्य, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री अनिल विज ने व्यक्त किए। अंबाला के दयालबाग स्थित सेवाकेंद्र के डायमंड जुबली पर बीपीएस प्लेनिट्रियम में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उन्होंने कहा आज के इस अशांत

वातावरण में जो कुछ भी शांति है उसमें बहुत बड़ा योगदान ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाए जाने वाले अध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग मेडिटेशन का है। क्षेत्रीय निदेशक चंडीगढ़ से आए

मलेशिया की ब्रह्माकुमारी मीरा ने संस्था के इतिहास व राजयोग के महत्व के बारे में बताया। मूल्य शिक्षा के निदेशक ब्रह्माकुमार पाडियामणी ने जीवन में मूल्यों की अनिवार्यता तथा उसे सहज ही धारण करने की विधि बताई। युवा प्रभाग के बीके अरुण, बीके प्रीति ने भी संबोधित किया। इस दौरान सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं को सहयोग तथा सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। वहीं अंतर्राष्ट्रीय गायक बीके जयगोपाल लूथरा तथा अनिल भाई ने मनमोहक गायकी द्वारा समा बांधा। कु. जसमीता ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। चंडीगढ़ से आई बीके कविता ने मंच संचालन किया।

राष्ट्रीय समाचार

सेवाकेंद्र पर किया महापौर, वार्ड पार्षदों का सम्मान

शिव आमंत्रण, सिरहा। बेपाल के सिरहा सेवाकेंद्र पर नवागिराचित महापौर एवं वार्ड पार्षदों का सम्मान किया गया। इस दौरान सांसद धाने देवी, महापौर देवनाथ शाह, समाजसेवी शशुभूज सिंह, वार्ड अध्यक्ष बसंत लाल, गोलबाजार सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रामदुलारी, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके जगदीश एवं अन्य संबोधित करते महापौर देवनाथ शाह। लोग शामिल थे। इस मौके पर बीके भगवान ने कहा समाज की सेवा के लिए भी आपसी रसेह, सहयोग एवं सौहार्द की आवश्यकता होती है जो केवल आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग के अभ्यास से ही आते हैं।



बीके भारती महिला गौरव अवार्ड से सम्मानित

शिव आमंत्रण, राजकोट। पूजा हॉबी सेंटर के सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन पर फार्मस ऑडिटोरियम में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें समाजसेवा में उत्त्वर्खनीय कार्य करने वाले 25 लोगों को सम्मानित किया गया। इस दौरान राजकोट सबजोन की प्रभारी बीके भारती को मानव कर्तव्यां मॉडल एवं युवी कल्प की चेयरमैन गीताबें पटेल ने महिला गौरव अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड उन्हें समाज में की गई आध्यात्मिक सेवाओं के लिए प्रदान किया गया। बीके भारती ने कहा संस्थान द्वारा पूरे विश्व में ईश्वरीय संदेश दिया जा रहा है। इस दौरान सबजोन प्रभारी बीके भारती, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके अंजु, बीके अंजु सहित कल्प से जुड़े अन्य सदस्य भी मौजूद थे।



कॉमनवेल्थ गोल्ड मेडलिस्ट ऊषा का सम्मान

शिव आमंत्रण, सोनीपत। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय मॉडल टाउन में साउथ अफ्रीका में आयोजित कॉमनवेल्थ गेम पार्ट लिपिटंग में 62.50 किलोग्राम में विश्व की सबसे ताकतवर महिला का खिताब जीतने वाली गोल्ड मेडलिस्ट ऊषा का सम्मान करती बीके रामदेवी। अभियान में स्वच्छता, बेटी बचाओ, महिला सशक्तिकरण, नशामुक्ति, जल स्वाबलंबन, साक्षरता, सामाजिक कुरीति उच्चमूल की जागृति के लिए चित्र प्रदर्शनी लगाई गई है। इस दौरान विश्व की सराहना करते हुए लोगों ने उषा की सराहना करते हुए लोगों की जागृति के लिए चित्र प्रदर्शनी लगाई गई है। इस दौरान अप्राप्ति की जागृति के लिए चित्र प्रदर्शनी लगाई गई है। उषा का सम्मान करती बीके रामदेवी।



पुणे में बन रहे जगदम्बा भवन का किया अवलोकन

शिव आमंत्रण, पुणे। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की प्रधम मुख्य प्रशासिका मां जगदम्बा भवन निर्माण की स्मृति में पुणे में निर्माणाधीन जगदम्बा भवन का अवलोकन करते संसद धाने देवी और मिडल इंस्टीट्यूट की निर्देशिका बीके जयंती, लेस्टर सेवाकेंद्र की संयोजिका बीके इंद्र, गॉलीलीयूड स्टूडियो के कार्यकारी निर्देशिका बीके हरीलाल ने पूर्ण रूप से जगदम्बा भवन की निर्माणाधीन कार्रवाई की जागृति को देखा। इस दौरान मीरा सोसाइटी सबजोन प्रभारी बीके सुनदिंदा, बीके उमिला, बीके दशरथ समेत पुणे के वरिष्ठ बीके भाई-बहनों मौजूद थे। यह भवन गॉलीलीयूड स्टूडियो के कार्यकारी निर्देशिका बीके हरीलाल के निर्देशन में बन रहा है।

उच्च जीवन के लिए व्यंजन की भूमिका

शुद्ध सात्त्विक भोजन ग्रहण करें, तप- साधना और मनोबल बढ़ाएं

आज की भाग-दौड़ वाली जिन्दगी में फैट-फूड अनिवार्य बन गया है। इसके तत्कालिक आकर्षणों में अनेकों रोग-दुःख समाये हैं। पिज्जा-बर्गर-पैटेस जैसे डिब्बा बन्द भोजनों के सामने पारम्परिक भारतीय भोजन को लोग पुराने जमाने की चीज़ समझने लगे हैं। इन्हें ही स्टेटस सिर्कल भी बना लिया है। सामान्य लोग भी इनके उपयोग में गौरव समझते रहते हैं। आकर्षक होने पर भी इनका सेवन करते रहने से शरीर व मन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता ही है। चाय में नॉस का अर्क और भोजन में अण्डों की मिलावट भी होने लगी है। यही हमारी सनातन दैवी मान्यताओं के लिये घातक हो रहे हैं। - ब्र.कृ. यामलखन, शांतिवन

अब तो जेनेटिक फूड कई देशों में बिकने लगे हैं। हमारे देश में भी अप्राकृतिक पेय पदार्थों का बहुत बड़ा धन्धा है। पाँच-सात सौ तरह के बोतन बन्द शर्बत-सौंस पेय बिकने लगे हैं। ऐसे पेय पदार्थ सजावट व दिखावट के लिये ज्यादा प्रयोग होते हैं। पेट की बीमारियाँ बढ़ाने में इनका विशेष हाथ है। इनसे ही एलर्जी-चम्प रोग जैसी अनेकों बीमारियाँ फैल रही हैं। आत्मा के पवित्र मन्दिर (शरीर) में अपवित्र भोजन कभी नहीं डालिये। डिब्बा बन्द खाद्य-पदार्थों के चर्चपटे होने के कारण इन पर लोगों की निर्भरता बढ़ती ही जा रही है। इनको सुरक्षित दिखाने के लिये कई तरह के बनावटी रसायन मिलाये जाते हैं। अप्राकृतिक और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होने से इनमें पोषक तत्व नगण्य होते हैं। अत्यधिक विज्ञापनों के कारण इनसे हर व्यक्ति आकर्षित हो जाता है। स्वास्थ्यप्रद न होने पर भी स्वाद के वशीभूत हो, बहुसंख्यक लोग इनके जाल में



बूंदी बनाने की विधि

एक किलोग्राम बेसन के लिये दो किलो शक्कर एवं एक लीटर पानी वाली चासनी को थोड़ा दूध डालकर, साफ करने की विधि से तैयार करें। उसमें एक ग्राम पिंकरी एवं नारंगी रंग भी मिक्स करें। अब चने के बेसन को पानी में इस अनुपात से मिलायें जिससे रबड़ी की भाँति गाढ़ा घोल बन जाये। पुनः उसमें हल्का-सा रंग भी मिला दें। पिछे खबूब गरम तेल में सॉचे से बेसन

के घोल को धीरे-धीरे डाला जाये। कदाई में तेल के बुलबुले बनते रहेंगे, जब बुलबुले बन्द हो जायें तो समझ लें कि बूँदी पक गई है, उस स्थिति में उसे तेल से निकाल कर बनी हुई ठण्डी चासनी में ही डालकर भिंगे दें। पाँच-सात मिनट पश्चात उसे पुनः अच्छी तरह छानकर अलग पात्र में रख लें, बूँदी अब तैयार है। इसमें फ़लायी पाउडर, ऐसेस भी मिला सकते हैं।

सतोप्रधान कमाई होनी चाहिए

शरीर के सचालन और आध्यात्मिक उत्थान में भोजन का प्रमुख स्थान है। इसलिये भोजन बनाने के साधन-सामान भी सतोप्रधान वृत्ति की कमाई के होने चाहिए। परमात्मा की याद में बनाकर भोजन ही स्वीकार करिये। यदि योगिक खेती से तैयार सब्जी, अज्ञ, फूल, दूध प्राप्त होने लगें तो कहना ही क्या?

दैवी संरक्षक-संकल्प और आभा-मण्डल व भारतीयता तैयार करता है। ऐसी आभामय आत्मा ही भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में अहम् भूमिका निभायेगी। मन को पारदर्शी बनाना है तो नैसर्गिक भोजन ही स्वीकार करिये। यदि योगिक सदस्य बढ़चढ़कर हिस्सेदारी के लिए दूंगा से ईश्वरीय याद में स्वीकार किया गया भोजन आत्मा में

मिसाल... 25 से अधिक कन्याओं ने प्रभु को अर्पण किया अपना जीवन

नवनिर्मित भवन 'प्रभु' को समर्पित



प्रभु समर्पण भवन के उद्घाटन समारोह में उपस्थित राजयोगिनी दादी जानकी, राज्यपाल द्वेषपदी मुर्मु व ईश्वरीय सेवा में समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनें।

शिव आमंत्रण ■ संबलपुर

उड़ीसा के संबलपुर में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के नवनिर्मित 'प्रभु समर्पण' भवन आम लोगों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया। सेवाकेंद्र का उद्घाटन राजयोगिनी दादी जानकी, ज्ञारखंड की राज्यपाल द्वेषपदी मुर्मु ने किया। संस्था के 80 वर्ष पूर्ण होने पर पी-एचडी ग्राउंड में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में



दादी व राज्यपाल ने किया उद्घाटन।

सांसद प्रसन्न आचार्य, विधायक राजेश्वरी पानीग्राही, बीजेपी के प्रदेश

अध्यक्ष सुरेश पुजारी, ग्लोबल हॉस्पिटल से आए मधुमेह रोग विशेषज्ञ बीके डॉ. श्रीमंत कुमार साहू, बीके डॉ. सचिन, मुंबई से आए कॉर्पोरेट ट्रेनर प्रो. बीके ई वी स्वामीनाथन, सबजोन प्रभारी बीके पार्वती, कटक सबजोन प्रभारी बीके कमलेश भी उपस्थित थीं। राज्यपाल द्वेषपदी मुर्मु ने दादीजी से भेंट की और शॉल औंडाकर सम्मानित किया। वहीं दादीजी ने उन्हें बैच पहनाकर सम्मानित किया। दादी ने

ईश्वरीय कार्य में किया समर्पित...

कार्यक्रम में 25 से अधिक कन्याओं ने अपना पूरा जीवन ईश्वरीय सेवाओं एवं आध्यात्मिकता का संदेश लोगों को पहुंचने के लिए अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प लिया।

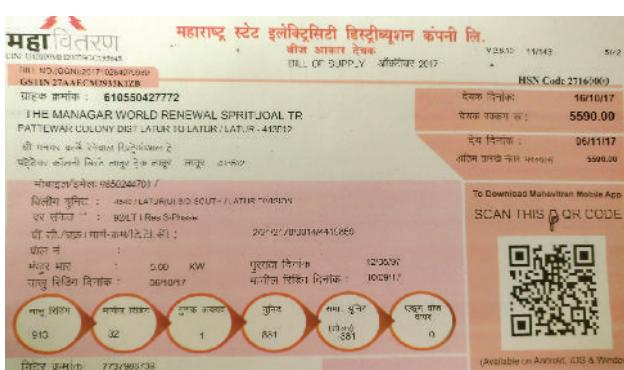
शुभकामनाएं देते हुए ईश्वरीय सेवा और स्वउत्तमि के बैलेस द्वारा हार कार्य में सफलता प्राप्त करने की शिक्षा दी।

अब लातूर में सोलार ऊर्जा से बनेगी बिजली लातूर सेवाकेंद्र पर सौर ऊर्जा संयंत्र किया स्थापित

शिव आमंत्रण ■ लातूर

सौर ऊर्जा एक ऐसी ऊर्जा है जिसके प्रयोग से मनुष्य की कई आवश्यकताएं प्राकृतिक संसाधनों से ही पूरी की जा सकती हैं। ऐसे में यह कहना अतिशयोक्त नहीं होगा कि लातूर सेवाकेंद्र पर सोलार ऊर्जा ने बिजली का बिल ही गुल कर दिया है। यह हकीकत है जो कम खर्च में अधिक प्राप्ति वाला तो है ही साथ साथ पर्यावरण की दृष्टि से भी अनुकूल है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संस्था के 80वर्षीय वर्षगांठ पर अपील की थी कि ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में संस्थान के सदस्य बढ़चढ़कर हिस्सेदारी



लातूर सेवाकेंद्र का यह जीरो वीजबील ही स्पष्ट करता है सौर ऊर्जा का कमाल।

निभाएं जिसे पूरा करते हुए संस्थान ने यह पहल की है। इसके तहत यह प्रयास किया गया है जो निश्चित तौर पर प्रधानमंत्री मोदी समेत देश के अन्य लोगों को भी प्रेरित करेगी। जागरूकता लाना ही मक्कसदः ऊर्जा संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए लातूर सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में केदार मुख्य रूप से मौजूद थे।

लातूर महावितरण परिमिति के मुख्य अधियंत्रां राजाराम मुरुड, उपकार्यकारी अधियंत्रां जितेंद्र राठोर मुरुड, आदित्य ग्रीन एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर अदित्य सांगवे, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नंदा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके पुण्या, एनर्जी ऑफिसर बीके विद्युत विद्युत वापस ली जा सके। इस विधि से हमारा विद्युत बिल जीरो आया और भविष्य में भी आता रहेगा। इस दौरान आदित्य सांगवे और जितेंद्र राठोर ने संस्थान के प्रयासों की सहायता करते हुए अन्य लोगों से विद्युत संरक्षण के लिए प्रेरित किया।



बढ़नी होगी सकारात्मकता की प्रवृत्ति

सकारात्मकता और नकारात्मकता दोनों ही चीजें मनुष्य के मन में हमेशा उमड़-उमड़कर आती है। यह व्यक्ति के संस्कार, माहौल, संगोदरे आदि पर निर्भर करता है। नैतिक रूप से कमज़ोर होता इंसान दिनोंदिन नकारात्मकता के चंगुल में फँसता जा रहा है। चाहे बच्चा हो या बूढ़ा, अमीर हो या गरीब हर कई इससे परिचित है। इसका असर यही निकल रहा है घर परिवार, समाज और हर जगहों पर तनाव और नफरत बढ़ रहा है। इसका असर केवल दूसरों पर ही नहीं बल्कि सबसे पहले खुद पर ही ज्यादा पड़ती है। जिससे व्यक्ति का व्यक्तित्व दूर से ही महसूस होने लगता है कि नकारात्मकता व्यक्ति के व्यक्तित्व पर कितना हावी है। बच्चे के अन्दर नकारात्मक सोच से उसका कैरियर और आशावादी नजरिया को समाप्त कर देता है। व्यक्ति के नकारात्मक सोच से उसके अन्दर कई और बीमारियां पनप जाती हैं। आज नकारात्मक सोच का ही परिणाम है कि हर जगह तनाव है। मनुष्य के अलावा प्रकृति पर भी इसका गहरा असर पड़ता है। इसलिए आज जितने भी लोग बिमार पड़ते हैं उसमें से ज्यादातर डिप्रेसन और तनाव के कारण होते हैं। हिंसा, गुस्सा, घृणा इसी का हिस्सा है। सकारात्मकता व्यक्ति के अन्दर हमेशा उर्जा का संचार करती है। निरंतर सकारात्मकता से व्यक्ति का व्यक्तित्व उर्जावान बनता है। सकारात्मकता से सोचने, समझने और ग्रहण करने की शक्ति बढ़ जाती है। वह गुणप्राही और मटु व्यवहार का हो जाता है। सहयोग, सहिष्णुता और आपसी सदभावना तेजी से विकसित होती है। असम्भव कार्यों को भी सम्भव करने की क्षमता का विकास होता है। इसलिए हर समस्या की समाधान के लिए सकारात्मक बनिये, खुश रहिए। दूसरों को खुशी बाटिये और प्रेम बढ़ाइये।

माइंड पॉवर

अपने अंदर छुपी शक्तियों को पहचानें

इ इतनी सारी चीजें वह देखेगा तो उसकी मेमोरी का क्या हाल होगा। तो हमें क्या करना है कि बच्चों को जो इंस्ट्रक्शन दिया जाए वह पॉर्जिटिव दिया जाए। नेगेटिव इंस्ट्रक्शन नहीं देना है हमें सिर्फ पॉर्जिटिव इंस्ट्रक्शंस ही देना है और जो नेगेटिव थोट उसके अंदर चले गए हैं उनको बाहर निकालना है। या तो हम फिजिकली रूप में निकालते हैं या मेंटली मेंटिशन में निकालते हैं। पर हम फिजिकली करेंगे क्योंकि हम बहुत देर से बैठे हैं तो अब आप क्या करेंगे सभी अपने दोनों हाथों को ऊपर कर लीजिए।

अब एक गाना बजेगा तब आपको क्या करना है बोलते-बोलते दोनों हाथों को ऊपर से नीचे तक झटकना है यह आपको जल्दी-जल्दी करना है हर बार झटकने के साथ आपके अपनी नेगेटिव थोट को भी अपने अंदर से बाहर करना है। सबसे पहले हम अपनी नेगेटिव थोट को अपने अंदर से बाहर करेंगे, फिर इस हॉल से बाहर करेंगे फिर किस राज्य से बाहर करेंगे फिर इंडिया से बाहर करेंगे और फिर पूरे विश्व से बाहर कर देंगे। एक दो मिनट ऐसा करने के बाद आप अपने दोनों हाथों को ऊपर कर लीजिए और अब आप विजयताइंज कीजिए कि सारी नेगेटिविटी सारी नेगेटिव थोट मुझ आत्मा पर से दूर हो चुके हैं मैं एक महान आत्मा हूं मैं एक शक्तिशाली आत्मा हूं मैं सब कुछ कर सकता हूं। अपने स्थान पर बैठ जाएं। कहते हैं कि

बीके शक्ति

मोटिवेशनल स्पीकर



भारत की 70 फीसदी जनसंख्या गांवों में बसती है जैसे की चित्र में देख रहे हैं 70 फीसदी जनता गांव में बसती है। बहुत दुख की बात है कि हम मोबाइल फोन के बिना रह सकते हैं पर फिर भी मोबाइल बनाने वाली कंपनी दिनोंदिन अमीर होती जा रही है। हम अनाज के बिना नहीं जी सकते खाने के बिना नहीं जी सकते लेकिन खाने बनाने वाले किसान गरीब होते जा रहे हैं। बहुत सोचने वाली बात है। इसलिए कहते हैं कि आदमी वही करता है जो वह चाहता है। आदमी वही करता है जो वह चाहता है लेकिन होता वही है जो भगवान चाहता है इसलिए कर वह जो भगवान चाहता है होगा वही जो तू चाहता है। इसलिए हमें करना वही है जो परमात्मा चाहते हैं। तो परमात्मा ने सारी शक्तियों को मनुष्य के अंदर ही डाल देते हैं वहीं छुपा देते हैं। इसलिए परमात्मा ने सारी शक्तियों को मनुष्य के अंदर ही छुपा दिया। तो परमात्मा ने सारी शक्तियों को हमारे अंदर ही डाल दिया लेकिन हम अपनी शक्तियों को ढूँढ़ने के लिए बाहर जा रहे हैं।

आई है एक बहुत अच्छी बात मैं आपके सामने स्पष्ट करना चाहूँगा कि कहते हैं जब हनुमान जी अपनी शक्तियों को भूल गए थे तब जामवंत जी ने उनको याद दिलाया था।

आप सभी हनुमान के सामान शक्तिशाली हैं आप सभी हनुमानजी के समान तेजस्वी हैं आप अपनी शक्तियों को भूल गए हैं इसलिए परमात्मा ने आपको अपने घर में बुलाया है और अब आप की शक्तियों को भी जागृत कर रहे हैं। तो आप निश्चित तौर पर बहुत अधिक महान हैं। एक बार कहते हैं कि देवताओं की एक सभा हुई और देवताओं की सभा में यह सैट किया गया है कि यदि मनुष्य को पता चल जाए तो आपको पुनः तरो-ताजा कर देता है। यह मरिटाइक में स्थिरता और संतुलन लाता है। एकाग्रता बढ़ने में सहायक है। यह आसन पैरों को मजबूती प्रदान करता है एवं संतुलन बनाने में सहायक है। जापों के फैलाव में भी सहायक है। नरों की दर्द में अत्यंत सहायक है।

आबू रोड़ एलान ए जंग, तहलका, दिलज़ले, फरिश्ते जैसी हिट फिल्मों समेत दर्जन भर टीवी सिरियलों के निदेशक तथ उपनिदेशक रहे गुजरात मूल के नरेश पटेल ने कहा कि रील लाइफ से रियल लाइफ बिल्कुल अलग होती है। दर्शकों को हमेशा फिल्म से अच्छी बातें ही जीवन में सीखनी चाहिए। वे दो दिवसीय आबू रोड़ प्रवास ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आये थे। उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री की चुनौतियों और उपलब्धियों पर खुलकर अपनी बात खबते हुए कहा कि यदि आपके पास टैलेंट और काम करने का जज्जा है तो कि किसी गॉड फादर की जरूरत नहीं होती है। हमेशा आपकी डिमांड होगी और आपको काम मिलता रहेगा। क्योंकि आज भी लोग कड़ी मेहनत करने वालों का समान रहता है। फिल्म और सिरियल जब डाइरेक्टर और प्रोड्यूसर बनाता है तो उसका मकसद लोगों का मनोरंजन के साथ कुछ सीख देने की भावना होती है। परन्तु यहाँ के युवाओं के लिए भी हमेशा स्वागत है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आने के बाद लगता है कि हमें अभिनय का असली पता यहाँ लगा है। हम सभी

मेरी कलम से



नरेश पटेल,
टीवी सीरियल, निर्देशक



मानसी पटेल,
फिल्म एवट्रेस

विचार करने चाहिए।

माउण्ट आबू के लिए फिल्म और सिरियल की दृष्टि से बेहतरीन लोकेशन बताते हुए कहा कि मुझे अवसर मिला तो जरूर मैं मूर्टिंग के लिए आउंगा। भले ही सिरोही जिला छाता हो परन्तु यहाँ के युवाओं के लिए भी हमेशा स्वागत है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आने के बाद लगता है कि आज भी मेडिटेशन की अति आवश्यकता है। ताकि वे अपना काम तनावमुक्त होकर कर सकें। ब्रह्माकुमारीज संस्थान इसके लिए बेहतर स्थान हो सकता है। तानांत्रों को भगाने का ब्रह्माकुमारीज संस्था में दिये जा रहे ज्ञान से बढ़कर कुछ भी नहीं है। यही एक रास्ता है जिससे व्यक्ति खुद के बारे में जानते हुए खुदा का पूरा परिचय जान लेता है। जिसने खुद और खुदा को जान लिया वह दुनिया की हर चीज समझ और जान लेगा। यह महान कार्य इस संस्थान में हो रहा है। अब लगता है कि नारी एक शक्ति की भाँति समस्त विश्व को बदलने की क्षमता रखती है।

योगासन

संतुलन और एकाग्रता बढ़ाता है वृक्षासन

इ हाथों को बगल में रखते हुए घुटने को मोड़ते हुए अपने दाहिने पंजे को बाएँ जंघ पर रखें। आपके पैर का तलवा जंघ के ऊपर हिस्से से सटा हुआ हो। बाएँ पैर को सीधा रखते हुए संतुलन बनाये रखें। अच्छा संतुलन बनाने के बाद गहरी सांस अंदर ले, कृतज्ञता पूर्वक हाथों को सर के ऊपर ले जाएँ और नमस्कार की मुद्रा बनाएं। बिल्कुल सामने की तरफ देखें, सीधी नजर सही संतुलन बनाने में अत्यंत सहायक है। रोद़ की हड्डी सीधी रहे। आपका पूरा शरीर रबर बैंड की तरह तना हुआ हो। हर बार साँस छोड़ते हुए शरीर को ढीला छोड़ते जाएँ और विश्राम करें, मुस्कुराते हुए शरीर और साँस के साथ रहें। धीरे-धीरे साँस छोड़ते हुए हाथों को नीचे ले आयें। धीरे से दाहिने पैर को सीधा करें। सीधे लम्बे खड़े हो जाए बिल्कुल पहले की तरह। अब बाएँ तलवे को दाहिने जांघ पर रख कर आसन को दोहराएं। योग शरीर व मन का विकास करता है। योग के



वृक्षासन की सावधानियां

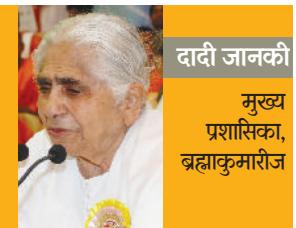
अगर आप माड्योन, अनिंदा, अत्प या रक्त चाप से पीड़ित हैं तो यह आसन न करें। उच्च रक्त चाप वाले इस आसन को हांथों को सर के ऊपर ले जाए बिना कर सकते हैं। हांथों को ऊपर ले जाने से रक्त चाप बढ़ सकता है।

वृक्षासन के लाभ...

इस आसन को करने के पश्चात आप ऊर्जा से परिपूर्ण महसूस करते हैं। यह आसन पैर, हाथों और बाजुओं की मांस-पेशियों में रिचार्च एवं पैदा करता है और आपको पुनः तरो-ताजा कर देता है। यह मरिटाइक में स्थिरता और संतुलन लाता है। एकाग्रता बढ़ने में सहायक है। यह आसन पैरों को मजबूती प्रदान करता है एवं संतुलन बनाने में सहायक है। जापों के फैलाव में भी सहायक है। नरों की दर्द में अत्यंत सहायक है।

अच्छे संस्कार से भी दूर होता है डिप्रेशन: शोध

शिव आमंत्रण, नई दिली। जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) की एक रिसर्च में सामने आया है कि संस्कार और भजन-कीर्तन के जरिए डिप्रेशन को दूर किया जा सकता है। स्टडी में कहा गया कि दिमाली बीमारी को दूर करने में ये उपाय दवाइयों से ज्यादा कारगर हैं। यूनिवर्सिटी के सेंटर फॉर स्टडी संरक्षण ने यह दावा किया है। सेंटर के प्रफेसर सुधीर कुमार ने कहा, जिन लोगों को बचपन में नैतिक मूल्य व संस्कार दिए जाते हैं, उन्हें योग शलकर और डिप्रेशन की समस्या कम होती है। योग भी इस मालै में कारगर सिद्ध होता है। रिसर्च में यह भी कहा गया कि व्यूक्तिलय फैमिली और परिवार में एक ही बच्चा होने जैसी समस्याओं का इलाज कर सकती है, लेकिन मानसिक समस्याओं का नहीं इसी तरह बढ़ता रहा।



दादी जानकी
मुख्य
प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज

सभी के स्नेही बनो तो दिल से दुआएं मिलेंगी



एक तो बोजरूप स्थिति में रहना माना डीप साइलेन्स में रहना । शान्ति वा शक्ति स्वरूप होकर रहना-शान्ति-शक्ति स्वरूप वाली हो, सुखी न हो । उसमें प्रेम आनंद पवित्रता की शक्ति समाई हुई हो । पर्सनलिटी में पवित्रता की शक्ति समाई हुई हो । पवित्रता हमको शान्त बनाती है । अपवित्रता अंश मात्र भी है तो वह अशान्त दुखी बनाती है, व्यर्थ सोच लेते हैं । जैलसी का पुराना संस्कार संकल्प में यूज हो जाता है तो शुद्ध बोजरूप स्थिति नहीं बनती है । फालों फादर करने के लिए ब्राह्म बाप को सामने रखो तो सारी शक्ति आ जायेगी ।

विघ्नों का कारण है, लगन की कमी...

एक ब्रह्म बाबा में सब कुछ समाया हुआ है । शिवबाबा भी उसमें समाया है । शिवबाबा को देखना हो तो इनके मस्तक में देख लो । उनको रहने के लिए इसने स्थान दे दिया है । दृष्टि भी मिलती है शिवबाबा से, ज्ञान भी सुना रहा है तो सुनाने वाला वह है । जैसे ब्रह्म बाबा का यह मुख है, मस्तक से पता चलता है कितनी याद है । कितनी फालों करने की लगन है । यह भी बाबा ने अच्छा कहा-जहाँ लगन है वहाँ निर्विघ्न स्थिति बनती है । विघ्नों का कारण है लगन की कमी । सेवा में चाहे स्व की स्थिति में, सदा निर्विघ्न स्थिति तब रहेगी जब लगन अच्छी होगी । लगन में अगर मगन है तो जैसे सर्वशक्तिवान का साथ है, उसके अगे कोई भी परिस्थिति आ ही नहीं सकती । अगर आती है तो हमें कुछ नहीं करेगी । बाबा गोदी में बिठा देगा या ऊपर उड़ा देगा । हमको बचा लेगा । हम उसके हैं तो भले आग लग रही हो, हम बच जायेंगे । बच्चे हैं तो बच गये । सदा सेफ्टी की ड्रेस अपने पास रखो तो कुछ भी नहीं होगा । कोई तूफान नहीं मोह अभिमान होगा । माया के तुक

न में नहीं आ सकते । अशुद्ध वायुमण्डल असर नहीं होता फिर औरों को भी बचा लेते । फायरब्रिगेड वाले कैसे भागते-भागते बचाते हैं । वह यह नहीं सोचते कि कहीं हमको आग न लग जाए । वह अपने को फायरप्रूफ रखकर कूद जाते हैं । तो हमारे अन्दर इतनी शक्ति हो जो । दूसरों को बचा सकें अपी ऐसी सेवा का प्लैन बनाओ । बाचा सेवा तो सहज है ।

यज्ञ की कर्मणा सेवा ही योगी बनाती है...

कर्मेन्द्रियों द्वारा जो सेवा होती है उससे अभिमान टूटता है । जो हड्डी प्यार से यज्ञ सेवा करने वाला है, उसके मुख से घड़ी-घड़ी बाबा-बाबा निकलेगा । जो बाबा से मिला है वह मेरी लाइफ में हो । गुणवान भी बाबा ने बनाया है ।

। श्रेष्ठ ब्राह्मण के लक्षण कैसे होते, यह बाबा ने सिखाया है, हर कदम में । और कुछ भी नहीं करो, समय पर किसी को भी सहयोग दो, मदद करो । सदा सहयोगी, सेवी होकर रहो तो दिल से दुआयें मिलेंगी । कोई समय श्वल सहयोग नहीं दे सकते तो भी ईश्वरीय गुप्त स्नेह देने में दाता बनो । यह नहीं देखो कि इसको इतना सहयोग दिया है, यह चेंज तो कुछ हुआ ही नहीं है । समय पर उसको मदद है । कर्म के बिना तो कोई काम का नहीं है । कोई किसी की मदद न करे तो वह यारा नहीं लगता है । कोई पड़ोसी को मदद करता है तो यारा लगता है । बीमारों को, पड़ोसियों को मदद करना अच्छी बात है तो यारा लगता है । बीमारों को, पड़ोसियों को मदद करना अच्छी बात है लेकिन फिर भी उसमें कर्मबन्धन हो जाए क्योंकि उसमें लोभ मोह अभिमान होगा । विकारी

जो बाबा से मिला वह हमारी लाइफ में हो

कोई भी सेवा करो, सेवा में बल है जो बाबा से मिला है वह हमारी लाइफ में हो । ऐसा हमको अनुभव होता है । मनुष्य को ही अपनी फ्रीक्वेंसी का स्तर ऊँचा बढ़ाकर ईश्वर के स्तर तक लाना होगा । जिसके कारण उनसे मेल हो सके । अपनी चेतना को ऊपर उठाने के

कर्मबन्धन होगा । और यज्ञ सेवा की तो उसमें एक तो पवित्र वायुमण्डल मिला । अच्छा कर्म करने को मिला । भले ज्ञादू लगाओ, बर्तन माजो । कितनी खुशी होती । घर में 10-20 रोटियां बेलेंगी, यहाँ हजारों बेलेंगी । कहेंगी कमाई बहुत है । बातावरण तो अच्छा मिला । यज्ञ का कोई भी काम करो-जैसे बाबा हमको दृष्टि दे रहा है । ताकत मिल रही है । कई समझते हैं शायद वाचा सेवा ही अच्छी सेवा है, यह सोचना राग है । कर्मणा सेवा हर्षितमुख से सेवा दी तो उसकी दुआयें बहुत मिलती हैं । वाचा सेवा में अभिमान आ सकता है ।

कर्मेन्द्रियों की सेवा से अभिमान टूटता है...



बीके ऊषा
वरिष्ठ
राजयोग
शिक्षिका,
माउंट आबू

वह तुरन्त अपनी तपस्या से उठे और चलने लगे अपनी गांव की ओर । जैसे ही वह अपने घर पहुँचे तो देखा कि सचमुच उनकी माँ का अन्तिम बक्त आ गया था । दरवाजे पर खड़े होकर उन्होंने अपनी माँ को कहा, माँ, उनकी माँ ने आँखे खोली और उनकी ओर देखा, आदि शंकराचार्य जी ने कहा, माँ मैं आ गया हूँ । माँ की चेहरे पर एक मुस्कान और संतोष के भाव आये और सहज ही उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया । इसको कहते हैं टैलीपैथिक कनेक्शन ।

मैटिटेशन भी परमात्मा के साथ एक टैलीपैथिक कनेक्शन है । जब हम भगवान को याद करें और उसका प्रत्युत्तर अनुभव हो तो कितनी खुशी होगी । यदि जीवन में कभी इत्तेफाक से ऐसा अनुभव हुआ भी होगा, लेकिन शायद उसे समझ नहीं पाए । जैसे मान लो आपने सुबह अपनी प्रार्थना में मन ही मन कोई संकल्प भगवान के सामने किया हो और दिन में आपका संकल्प पूरा हो जाए तो मन में आश्चर्य भी होगा और खुशी ही होगी । तब लगता है जैसे भगवान हमारे मन की बात सुनता है । लेकिन यह कभी कभी अनुभव होता है परन्तु अगर यह अनुभव निरंतर करना हो तो उसके लिये क्या करें? यह अनुभव तभी सम्भव है जब व्यक्ति निरन्तर अध्यास के द्वारा ईश्वर से अपना सम्बन्ध जोड़ लेता है ।

परमात्मा की फ्रीक्वेंसी उच्च स्तर की होती है

परमात्मा की फ्रीक्वेंसी उच्च स्तर की होती है मनुष्य की फ्रीक्वेंसी का स्तर निम्न होता है । अतः दोनों का मेल कठिन होता है । मनुष्य को ही अपनी फ्रीक्वेंसी का स्तर ऊँचा बढ़ाकर ईश्वर के स्तर तक लाना होगा । जिसके कारण उनसे मेल हो सके । अपनी चेतना को ऊपर उठाने के



लिए हमें देहभान की स्मृति को बदल कर स्वयं को आत्मा भाव में स्थित करना होगा । आत्म स्वरूप में मन को स्थित करने से हमारे संकल्प परमात्मा की फ्रीक्वेंसी से मिलने लगते हैं । और तब हमारा ईश्वर के साथ एक स्वाभाविक संवाद कायम हो जाता है और सहज ही मन के हर भाव का प्रत्युत्तर प्राप्त हो जाता है । फिर तो हम भी उसकी हर बात का संकेत समझ सकते हैं और परमात्मा भी हमारे मन की हर बात को सुन सकते हैं, समझ सकते हैं ।

ईश्वर संकेत देते हैं

कई बार आपने जीवन में ऐसा अनुभव किया होगा कि आप सुबह के समय एकदम विश्राम की स्थिति में बैठे हो और आप को जैसे कुछ घटित होने का आभास होता है । परन्तु उसे स्पष्ट समझ न सकने के कारण आप उस पर ध्यान नहीं देते । बाद में जब वह घटना प्रत्यक्ष घटित होती है तो आप सोचते हैं कि सुबह-सुबह मुझे यह अभास हुआ था, जिसका संकेत ईश्वर से नहीं पाए । जिसके कारण उनसे मेल हो सके । अपनी चेतना को ऊपर उठाने के

जिस प्रकार रस्ते चलते हमें हजारों लोग मिलते हैं लेकिन हरेक के साथ अपनी मेंटल फिक्वेन्सी की टूनिंग वहीं होती भावार्थ हम हरेक को याद नहीं करते क्योंकि याद करने के भी कुछ आधार होते हैं जो इस प्रकार है:-

याद के चार आधार...

1. परिचय... जिसके साथ हमारा थोड़ा भी परिचय होता है, हम उसको याद करते हैं । परिचय के बिना किसी की भी याद संभव नहीं है ।

2. सम्बन्ध... जिसके साथ हमारा थोड़ा बहुत भी सम्बन्ध होता है, तो उस सम्बन्ध के आधार पर उसकी याद जाती है ।

3. स्वेच्छ-प्यार... जिसके साथ स्वेच्छ प्यार होता है, उसे हम याद करते हैं ।

4. प्राप्ति... जहाँ से कुछ मिलने वाला हो, कुछ प्राप्ति होने वाली हो उसको याद किया जाता है । संक्षेप में किसी को याद करने के ये चार आधार हैं- परिचय, सम्बन्ध, स्वेच्छ और प्राप्ति । इन चार आधारों पर चार प्रकार की याद होती है । जहाँ सिर्फ परिचय है वहाँ याद करने की मेहनत होती है । जैसे मान लो कि घर में कोई पर्टी है और उसमें सभी परिचय व्यक्तियों को बुलाना है तो एक-एक को बैठ कर याद करेगा । एक लिस्ट तैयार करेगे ताकि कोई भी छोट न जाए और याद करके उसको निर्माण पत्र भेजेंगे अर्थात् जहाँ सिर्फ परिचय है, वहाँ याद करने की मेहनत है । जहाँ सम्बन्ध है वहाँ याद भी स्वाभाविक होती है जैसे कभी-कभी सम्बन्धियों की तीव्र याद सताती है । जैसे माँ का बच्चे के साथ सम्बन्ध है । मान लिजिए कि बच्चा कहीं हॉस्टल में रह कर पढ़ रहा हो और वहाँ से खबर आ जाए कि बच्चे की तबियत ठीक नहीं है । तो माँ को क्या होगा? उस बच्चे की याद सताएगी । खाना बना रही होगी - याद उस बच्चे को करेगी कि क्या वह भी खाना खा रहा होगा? क्या कर रहा होगा? अपना ध्यान रखता होगा या नहीं, दवाई समय पर लेता होगा या नहीं?

विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने चेताया

..... तो खतरे में पड़ सकता है मानव का वजूद



शिव आमंत्रण, जिनेवा । वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा काफी उच्च स्तर पर पहुँच गई है । दुनिया में सीओटू का एवरेज कॉन्सन्ट्रेशन-2016 में बढ़कर 403.3 पार्ट्स पर मिलियन हो गया है । जबकि वर्ष 2015 में यह 400.00 पीपीएम था । इसकी वजह

मानवीय गतिविधियों के साथ-साथ अल नीनो का प्रभाव भी है । गोरतलब है कि यह रिपोर्ट ऐसे समय आई है जब अमेरिका और सीरिया के बीच दो देशों को छोड़कर बाकी सभी देशों परिस समझाई गई है ।

मौसम से संबंधित संयुक्त राष्ट्र एजेंसी की सालाना रिपोर्ट (ग्रीन हाउस गैस बुलेटिन) में वर्ष 1750 से बातावरण में खतरनाक गैसों की बढ़ी मात्रा के बारे में जानकारी दी गई है । डब्लूएमओ के वायुमण्डल अनुसंधान विभाग

आखिरी बार पृथ्वी पर इतनी ज्यादा सीओडब्लू की बीती से पांच मिलियन साल पहले थी । उस समय सुमुद्र का स्तर आज की तुलना में 20 मीटर (66 फीट) ज्यादा था और पृथ्वी 2-3 डिग्री सेलिसियस ज्यादा गर्म थी । डब्लूएमओ के चीफ पेटरी टालस ने कहा कि अब भी उम्मीद है कि इस चिंताजनक स्थिति को बदला जा सकता है और कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में कमी लाई जा सकती है । इसके लिए कदम बढ़ाने का यही समय है ।

शिव आमंत्रण से विशेष चर्चा में बालब्रह्मचारी योगेश्वरी माता परमतेजस्विनी ने कहा- विश्व में नारी शवित ही बजाएगी परिवर्तन का बिगुल, ब्रह्माकुमारियों ने असंभव कार्य को संभव कर दिखाया

शख्सयत



बालब्रह्मचारी
योगेश्वरी माता
परमतेजस्विनी

आप पिछले 15 से अधिक वर्षों
से शिव साधना कर रही हैं।

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड



ब्रह्माकुमारीज की पवित्रता ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया...

विश्व में परिवर्तन की मिसाल नारी शक्ति ही बनेगी। ब्रह्माकुमारियों ने असंभव कार्य को संभव कर दिखाया है। माउट आबू से जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया जा रहा है, यही ज्ञान एक दिन विश्व को नई राह दिखाएगा। विश्व परिवर्तन का ये झंडा एक दिन पूरे विश्व में लहराएगा और इस परिवर्तन का आधार ब्रह्माकुमारियों ही बनेगी।

उक्त उद्गार शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में हिमालय की कंद गुफाओं में तपस्या करने वाली, बालब्रह्मचारी योगेश्वरी माता परमतेजस्विनी ने व्यक्त किए। इस दौरान उन्होंने खुलकर आध्यात्मिकता, वर्तमान परिप्रेक्ष्य और युवाओं पर अपनी बात रखी। ब्रह्माकुमारीज द्वारा दिए जा रहे ज्ञान को लेकर कहा कि एक दिन यही ज्ञान बदलाव का आधार बनेगा। इससे ही दुनिया में बदलाव आएगा। क्योंकि यहां से लोगों को नैतिकता की शिक्षा दी जा रही है, वह पूरे विश्व और समाज के लिए बहुत जरूरी है।

माता परमतेजस्विनी की परवरिश बचपन से ही राजसी ठाठ-बाट से हुई। राजसी परिवार से होने के नाते कभी किसी चीज की कमी नहीं रही। इसके बाद भी मन हमेशा आध्यात्मिकता की ओर खींचता। उन्होंने कहा हमेशा लगता था कि इस दुनिया के अलावा कोई शक्ति है, उसे प्राप्त करना है। इसी के चलते संसार की सभी भौतिक सुख-सुविधा को छोड़कर 46 वर्ष की उम्र में सन्यास का जीवन अपना लिया।

परिवार के तमाम विरोध के बाद भी मन में शिव आराधना के संकल्प को पूरा करने निकल पड़ी। इस यात्रा में सबसे पहले जगतज्योति वसवर्ण महाराज से भेंट हुई, जिनसे 'वचन' (सद्विचार) लिखने की प्रेरणा मिली। बाद में हिमालय पहुंची, जहां अपनी तपस्या जारी रखी। साल में 3-4 महीने हिमालय में रहकर ही तपस्या करती है। आपका जन्म 1997 में हुआ और आपने 12वीं तक पढ़ाई की है।

संदेश

'सत्यमेव जयते' विषय पर मुंबई में व्याख्यान माला...

हम सभी सत्य की दुनिया के हैं रहवासी

शिव आमंत्रण ■ मुंबई

एक समय हम सभी सत्य की दुनिया सत्युग के बासी थे। हर मानव के अंदर सदाचार और सत्यांशी थी। अब कलियुग में सब जगह झूट का ही बोलबाला है। कोर्ट में गीता के ऊपर हाथ रखकर भी झूकी कसम उठते हैं। इस दुनिया की सत्यता की गहराई गयब नहीं होती, तो इसको मृत्यु लोक नहीं कहा जाता।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव बीके ब्रजमोहन ने व्यक्त किए। मुंबई के भांडुप सेवाकेंद्र द्वारा सत्यमेव जयते विषय पर व्याख्यान माला का



डॉ. अजय को सौगत देती बीके लाजवंती बहन व बीके ब्रजमोहन भाई।

आयोजन जैनम हॉल में किया गया। इसमें फिल्म निदेशक नरेंद्र मुधोलकर, नवशक्ती के संपादक सुकृत खांडेकर, फिल्म एवं टेलीविजन सीरियल के प्रमुख नरेन्द्र मुधोलकर, फिल्म निर्माता संदीप राशे, शास्त्रीय गायक डॉ. अजय पंडित पोहनकर, नवशक्ति के संपादक सुकृत खांडेकर, मुलुंद सबजोन प्रभारी बीके गोदावरी, भांडुप सेवाकेंद्र प्रभारी बीके लाजवंती

समेत अन्य प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। डॉ. पंडित अजय पोहनकर, नवशक्ती के संपादक सुकृत खांडेकर, फिल्म एवं टेलीविजन सीरियल के प्रमुख नरेन्द्र मुधोलकर, फिल्म निर्माता संदीप राशे ने भी संस्थान के कार्यों की सराहना की।

अब अंग्रेजी में भी पीस न्यूज इंटरनेशनल का प्रसारण

गॉल्डलीवुड स्टूडियो
लगातार न्या आयाम तय
करता जा रहा है।

आध्यात्मिक उत्थान वाली
सामग्री के साथ पीस

न्यूज का पीस ऑप माइंड चैनल के साथ देश के कई चैनलों में इसके प्रसारण ने एक मुकाम हासिल किया है। सकारात्मक खबरों के प्रसारण से लोगों में एक सकारात्मक संदेश गया है।

परन्तु अब लोगों की लगातार अंग्रेजी में पीस न्यूज की बुलेटिन की डिमांड हो रही थी। इस मांग को देखते हुए पीस न्यूज इंटरनेशनल न्यूज किया गया है। जो अभी प्रत्येक रविवार को सायं नौ बजे दुनिया भर में ब्रह्माकुमारीज संस्था से जुड़ी सामाजिक सोशलों की खबरों को अंग्रेजी में देखते व सुनते को उपलब्ध होगा। - बीके हरीताल, गॉल्डलीवुड स्टूडियो

राष्ट्रीय समाचार

नवरंगपुर में राजयोग सीखने के लिए जागृति

शिव आमंत्रण, नवरंगपुर। ओडिशा के नवरंगपुर सेवाकेंद्र में भारत के प्राचीन राजयोग से स्वस्थ व सुखमय भारत का निर्माण विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत के सदस्य प्रीति सिंह मोहनपत्रा, सुदर्शन माझी, योगिनी गैरीज और विष्णु विष्णु के बारे में गहराई से बताया है।

नवरंगपुर की रैली में शामील बीके भाई बहने।

माझी, पंचायत समिति के उपाध्यक्ष बिसुसिल, सबजोन प्रभारी बीके नीलम, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता समेत अनेक लोग जोगूद थे। इस अवसर पर शहर में रैली निकाली गई जिसमें बीके सदस्यों ने लोगों को राजयोग सीखने के लिये जागरूक किया। इसके साथ ही सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम हुआ जिसमें बीके नीलम ने कहा, कि हम राजयोग के अभ्यास से भौतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उच्छव तो जागृति कर सकते हैं और खर्चिम भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका बिभा सकते हैं। बीके योगिनी ने राजयोग मेडीटेशन का अभ्यास कराया। इस मौके पर अंतिरिक्षों ने भी अपने विचार व्यक्त किये व उन्हें अंत में ईश्वरीय सोगात भेज कर सम्मानित किया गया।

गुरु नानक जयंती पर जुलूस का किया स्वागत

शिव आमंत्रण, उल्हासनगर। महाराष्ट्र के उल्हासनगर में गुरु नानक जयंती पर

विशाल जुलूस निकाला गया। यहां की सभी दरबारे मिलकर एक बड़ा जुलूस निकालते हैं। गुरु नानक और गुरु गोविंद सिंह के जुलूस निकलते। थायरा सिंह संत दरबार के प्रमुख टिल्भाई और जसभाई का उल्हासनगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सोम और कुर्ला कैंप रोड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके पुष्पा ने शॉल ओढ़ाकर व फूलों से स्वागत किया। पांच प्यारों का भी सेवाकेंद्र की तरफ से सम्मान किया गया।

राजयोग को करें दिनचर्या में शामिल : पूनम

शिव आमंत्रण, ऐजावाल। ऐजावाल में बीएसएफ जावानों के लिये ब्रह्माकुमारीज के सुरक्षा सेवा प्रभारी द्वारा स्ट्रैट सेवाकेंद्र विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें आईजी एनएस जामावाल, डीआईजी अशोक कुमार झा, कटक से राजयोग शिक्षिका बीके असिमता, दिल्ली से आये इंडियन वेवी के कमांडेट बीके शिवरिंह, माउट आबू से बीके राजविंह, फरीदाबाद से राजयोग शिक्षिका बीके पूनम नुसरद रूप से उपस्थित थी। इस कार्यशाला में बीके सदस्यों ने स्त्रीप मेनेजर्मेंट, मेनेजर्जंग चैलेंजिंग सिचुरिसेंस, पॉजीटिव थिकिंग एंड हैप्पी लाइफजैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी एवं राजयोग मेडीटेशन को अपनी दिनचर्या में शामिल करने का आहार किया। इस अवसर पर अशोक कुमार झा ने कहा, कि तनाव व अशांति को कम करने के लिये ब्रह्माकुमारीज सराहनीय कार्य कर रही है। ऐसे ही यह कार्यशाला आजाम के सिलघर में भी आयोजित की गई जिसमें बीएसएफ के अफिसर्स, असिस्टेंट कमांडेट, जवान एवं सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ज्योति समेत सेवा सुरक्षा प्रभाग से आये बीके के सदस्य सुख्य रूप से शामिल थे।

पेज 1 का शेष.... चरित्र निर्माण से बनेगा...

राज्याल आचार्य देववत ने कहा हमारी संरक्षित में सार्वजनिक और निजी जीवन में भेद नहीं किया गया है। जो मन में है वह वासी में होना चाहिए और जो वासी में है, वह कर्म में दिखाना चाहिए। मन, वचन, कर्म एक होने से ही समाज में परिवर्तन आता है। आचारण की शुद्धता बलाए रखने का कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने लोगों से देखभाव के उच्च आचारण को जीवन में अपनाने का आग्रह किया। कान्या भूषण हत्या के खिलाफ भी जागृति आनी चाहिए तथा जल संरक्षण, जैविक कृषि एवं गोपालन व समरसता जैसे सामाजिक अभियानों में हर व्यक्ति को योगदान देना चाहिए। इससे पूर्व राज्यपाल ने ओम शान्ति भवन का उद्घाटन किया। माउण्ट आबू की राजयोगिनी बीके ऊजा बहिन ने राज्यपाल का स्वागत किया। आयोजित किया गया गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मेले में 12 ज्योतिर्लिंगम् स्थापित कर दिया परमात्मा शिव का संदेश

शिव आमंत्रण, कथुआ। भारत में जिनने भी ज्योतिर्लिंग हैं वह परमात्मा शिव के यादार हैं और आज लोग उनकी पूजा तो कर रहे हैं लेकिन उनको ये मालूम नहीं है कि परमात्मा शिव कभी न कभी इस धरती पर आये थे और उन्होंने पूरी दुनिया के लोगों की सद्गति कर सदा के लिये सुखी बनाया था। भगवान के सभी भक्तों को इसी बात से अवगत कराने जम्पु के कथुआ में विशाल बारह ज्योतिर्लिंगम् मेले का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ बन एवं पर्यावरण मंत्री चौधरी लाल सिंह ने रिबन काटकर किया, इस अवसर पर उन्होंने अपनी शुभकामनायें



चैतन्य देवियों के साथ बीके भाई बहने।

व्यक्त करते हुये कहा, कि बीके बहने समाज में आध्यात्मिक जाग्रत्त लाने के आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ बन एवं पर्यावरण एवं राजयोग सराहनीय है।

मेले में चैतन्य देवियों की ज्ञानी, कृष्ण सुदामा का रास, राजयोग

मेडिटेशन कक्ष, तनाव मुक्ति शिविर एवं अन्य कई आयोजन किये गये जिसमें हजारों लोगों के परमात्मा शिव द्वारा दिये जा रहे आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग की जानकारी मिली। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विधायक राजीव

जेसरोतिया ने भी मेले का अवलोकन किया व इस आध्यात्मिक आयोजन की प्रशंसा की। अंत में चैंडीगढ़ - 15ए की प्रभारी बीके अनिता, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बीना ने उन्हें ईश्वरीय सौगत भेंट कर सम्मानित किया।

मन की खुशी से होगा तनाव खत्म

तनाव प्रबंधन कार्यक्रम में बीके पूनम ने कहा-

शिव आमंत्रण, सीधी। तनाव एक ऐसी बीमारी है जिससे व्यक्ति मन ही मन कमज़ोर होने के कारण उसका मनोबल कम होने लगता है यहां तक की उसकी निर्णय शक्ति भी कम हो जाती है। इसे केवल मन की खुशी के द्वारा ही खत्म किया जा सकता है। अब मन की खुशी जीवन में कैसे आये इसके बारे में बताने के लिए मध्यप्रदेश के सीधी में अलविदा तनाव विषय पर कार्यक्रम का



चैतन्य देवियों के साथ बीके भाई-बहने।



तनाव प्रबंधन विशेषज्ञ बीके पूनम

आयोजन किया गया जिसमें तनाव प्रबंधन विशेषज्ञ बीके पूनम ने खुशनुमा जीवन बनाने के सरल व व्यवहारिक तरीके बताये और अपने विचारों को श्रेष्ठ बनाने तथा राजयोग का नियमित अभ्यास करने की सलाह दी। इस कार्यक्रम में युवाओं

द्वारा एक लघु नाटिका भी प्रस्तुत की गई थी व स्वर्णिम युग के देवी - देवताओं का सजीव चित्रण किया गया था, जिसमें यह बताया गया कि परमिता परमात्मा शिव आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के द्वारा मनुष्यात्माओं को देव तुल्य बना रहे हैं। इस दौरान उपस्थित लोगों ने जाना कि राजयोग का नियमित अभ्यास करने से सदा खुशनुमा जीवन का अनुभव किया जा सकता है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रेखा व अन्य बीके बहनों ने अतिथियों को ईश्वरीय सौगत भेंट कर सम्मानित किया।

तनाव से मुक्ति के लिए मेडिटेशन जरूरी : अग्रवाल

शिव आमंत्रण, रायपुर। राज्यपाल एवं आबकारी विभाग के सचिव अशोक अग्रवाल ने कहा, कि वर्तमान भौतिक युग में अध्यात्म से दूर होने के कारण जीवन में तनाव बढ़ता जा रहा है। तनाव से मुक्ति पाने के लिए सभी को राजयोग मेडिटेशन जरूर सीखना चाहिए। अध्यात्म से ही समाज में खुशहाली आ सकती है। अध्यात्म आज की पहली जरूरत है।

श्री अग्रवाल प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चौबे कालोनी में आयोजित व्याख्यान माला ज्ञानांजलि में अपने विचार रख रहे थे। विषय था विश्व परिवर्तन का आधार आध्यात्मिकता। उन्होंने कहा, कि आजकल इन्टरनेट का उपयोग बेतहासा



दीप प्रवेशलन कर कार्यक्रम की शुरुआत करते अतिथि।

बढ़ गया है। फेसबुक, व्हाट्स एप आदि का प्रयोग बहुतांश लोग करने लगे हैं। विषय था विश्व परिवर्तन का आधार आध्यात्मिकता। उन्होंने कहा, कि नजदीक लाने के लिए उन्हें अध्यात्म

को अपनाने के लिए जागरूक करने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया का जरूरत से ज्यादा उपयोग करना ठीक नहीं है। लोगों को एक दूसरे के दोहन नहीं करना चाहिए।

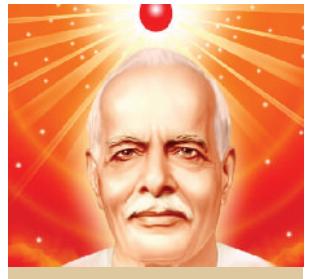
लोगों के जीवन में खुशी कम हो गई

क्षेत्रीय निदेशिका बीके कमला ने कहा कि वर्तमान सदी तनाव और अवसाद की है। लोगों के जीवन में खुशी और उत्साह की कमी हो गई है। इसका प्रमुख कारण है कि लोगों में इच्छाएं और अपेक्षाएं जरूरत से ज्यादा बढ़ गई हैं। विश्व का परिवर्तन एकमात्र अध्यात्म के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। राजयोग मेडिटेशन से नकारात्मक और व्यर्थ विचार समाप्त होने लगते हैं। राजयोग शिक्षिका बीके भवना ने बतलाया कि राजयोग एक सर्वोत्तम योग पद्धति है। इससे मनुष्य का तन और मन ढोने स्वस्थ और साचिक बनता है।

रियल लाइफ

ओम् से मनवा अब साध कर, उजड़ा हुआ घर आबाद कर

प्रजापिता ब्रह्मा



संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

प्रकार एक गीत बना लिया- खबरदार हो कर सुनो प्यारी बहनो, अज्ञानी नरों से सगाई न करना। हैं आजकल के विकारी बने नर, क्षणिक प्रेम में फँस तबाह न होना। खाते मांस-मदिरा, बने सर्व-भोगी, ऐसे विकारी का दर्दन न करना। खोया चाल-चलन है बुरी संगतों में, भला ऐसे नर का भरोशा क्या करना। करो देख ज्ञानी पति प्यारी बहनो, केवल रूप धन पर कच्चई न करना। स्वधर्म न भूले घड़ी एक भी जो, ऐसे पति का पल्ला तुम पकड़ना। स्वयंवर में लिए खब्बे सोचो-विचारों, सीता-सती सम गले फूल धरना। फलेगा फूलेगा, गुल जो खिलेगा, जगत का उद्घार वह निश्चय समझना।

सोचने की बात है कि माताओं-कन्याओं ने अपनी ही माता-जाति का जो तिरस्कार देखा और उन पर अत्याचार भी देखा तो उन्होंने स्वयं अपने मन से ही पवित्र रहने का निर्णय किया था। इसमें बाबा क्या कर सकते थे? बाबा तो गीता के ये महावाक्य सुनाया करते थे कि 'हे वत्स काम ज्ञानवान मनुष्य का महाशत्रु है अथवा काम-क्रोध और मोह नरक के द्वार है।' इन महावाक्यों को सुनकर 'काम' विकार को छोड़ने का निर्णय तो माताओं ने स्वतः अपनी ही इच्छा से किया था। अतः बाबा उनसे कहते थे कि 'हे वत्स काम ज्ञानवान मनुष्य का महाशत्रु है अथवा काम-क्रोध और मोह नरक के द्वार है।'

उन कामातुर पति लोगों ने तो क्या, उनके माता-पिता बुर्जुर्गों ने भी धर्म-शर्म छोड़कर उन माताओं से आग्रह किया कि पति से वासना-भोग करो। न केवल इतना ही किया बल्कि वे एक कमेटी बनाकर अथवा पंचायत लेकर बाबा के पास आये। उन्होंने दादा के सामने ऐसी तीन माताओं का मामला रखा जिन्होंने कि अपने-अपने पति को विषय-भोग के लिए इन्कार कर दिया था।

जीवन प्रबन्धन

हम खुश रहेंगे तो ही दूसरों को खुशी दे पाएंगे



बीके शिवानी, गुरुग्राम
जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञ और
मोटिवेशनल स्पीकर

कनुप्रिया: वास्तव में हमें ये जांचने की आवश्यकता है। जब हम देखना चुरू करते हैं तो हमें अनुभूति होती है कि हम कर क्या रहे थे।

बीके शिवानी: आपको देखा तब आपको इसकी अनुभूति हुई अभी तक तो आपको अनुभूति भी नहीं थी कि हम अंतीम के बारे में कितना और भविष्य के बारे में कितना बात करते हैं।

प्रश्न: जब मैं खुश रहने में सक्षम नहीं हूँ तो मैं किसी को खुशी भी नहीं दे सकती हूँ। इस तरह से हमारा तनाव बाहर निकलता है जो हमारे काम का या जिंदगी का या हर रोज का जब घर तक पहुँचने-पहुँचते आपको यातायात में ढो धंडे लगते हैं उस पूरी प्रक्रिया में जो आपको चीजें वहाँ होती हैं या करवानी हैं तो हम तनाव का अनुभव करते हैं ऐसे समय पर हम क्या करें?

उत्तर: उसके लिए भी हमारी कुछ धारणायें बनी हुई हैं जिसको हम पहले जांचेंगे तो तनाव अपने आप दूर हो जायेगा। पहली बात कि तनाव शब्द को ही देखें। यह हमारी बोल-चाल की भाषा में बिल्कुल नया शब्द है। मैं सोचती हूँ कि आज से 15-20 साल पहले हमारी बोल-चाल की भाषा में ऐसा कोई शब्द ही नहीं था। हम कहते थे चिंता, तनाव, लैकिन अभी तो खिंचाव मतलब कि हम एक कदम आगे बढ़ते जा रहे हैं और आज हम सिर्फ व्यावासिक जगत में ही नहीं बल्कि एक विद्यार्थी भी डन शब्दों का प्रयोग करता है। जिस आयु वर्ग के लोगों को हम कहते थे विद्यार्थी जीवन सर्वोत्तम जीवन हैं आज वहीं विद्यार्थी में खिंचाव बढ़ता जा रहा है।

प्रश्न: मैं देखती हूँ कि इस नजरिये के कारण बच्चे खिंचाव में चले जाते हैं। अपने ही नजरिये को बोच्चे ऐसे निर्मित करते हैं कि वे खिंचाव में चले जाते हैं और जीवन में ऐसी परिस्थिति आती है कि हम आपको ही प्रतियोगिता में डाल देते हैं तो ऐसी स्थिति में तो 'खिंचाव' तो होना ही है।

उत्तर: आज यह एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है क्योंकि अगर आप खिंचाव में नहीं हैं, आप एकदम हल्के हैं, इसका है कि आप कुछ कर ही नहीं रहे हैं। अगर कोई कुछ कर रहा है तो वो हाँ कर रहा है, प्रतियोगिता कर रहा है, तो उसको खिंचाव होना ही होना है। यह हमारी बहुत ही गहरी मान्यतादबिलीक सिरटम्हूँ है कि 'तनाव होना तो स्वाभाविक है'।

प्रश्न: ये तो होना ही चाहिए, अपने बच्चे के लिए जब मैं एक माँ हूँ तब मैं ये नहीं देखती हूँ कि इससे उसे कितना कष्ट हो रहा है।

उत्तर: उसे नहीं देखती, उसके खिंचाव को नहीं देखती ये दो अलग-अलग वाक्य हैं। एक है कि आप लापरवाह हैं। आपकी परीक्षा है और आप पढ़ नहीं रहे हैं तो आप लापरवाह हैं। एक है कि आप तनाव में हैं, अब हम दोनों चीजों को एक समान कैसे बोल सकते हैं।

प्रश्न: हम दोनों चीजों को एक ही मानके लग गये हैं।

उत्तर: अभी एक है कि कल मेरी परीक्षा है और मुझे पढ़ना है। लैकिन मैं पढ़ नहीं रही हूँ तो यह लापरवाही है। कोई कहता भी है कि आप अपने पढ़ाई के प्रति गम्भीर नहीं हो लैकिन हम उसको भी ध्यान नहीं देते हैं। एक है कि मुझे इसना ज्यादा दर्द ने घेर लिया है अब क्या होगा, कल क्या होगा, मेरे से नहीं होगा, ये तो बहुत मुश्किल है। अगर मेरे अंक ठीक नहीं आयेंगे तो माता-पिता क्या बोलेंगे? हमारे छोटे क्या सोचेंगे? यह जो नकारात्मक संकल्पों का चक्रव्यूह है उसमें हम फँसा जाते हैं और अगर हम पढ़ने भी बैठते हैं तो हमसे पढ़ाई नहीं होती है और तब हम यहीं कहते हैं कि मैं तनाव में हूँ। अगर ऐसी स्थिति में हम पढ़ेंगे तो क्या होगा।

नाव शब्द को ही देखें। यह हमारी बोल-चाल की भाषा में बिल्कुल नया शब्द है। मैं सोचती हूँ कि आज से 15-20 साल पहले हमारी बोल-चाल की भाषा में ऐसा कोई शब्द ही नहीं था। हम कहते थे चिंता, तनाव, लैकिन अभी तो खिंचाव मतलब कि हम एक कदम आगे बढ़ते जा रहे हैं।



मत्ते ही हम पढ़ने के लिए बैठे हों लैकिन हमारा मन व्यर्थ संकल्पों में चला जाता है। परिणामस्वरूप हम जो पढ़ते हैं वो हमें याद नहीं रहता है और हमारा प्रदर्शन भी अच्छा नहीं होता है।

कई बार हम कहते भी हैं कि परीक्षा में हमें सब कुछ आता था, लैकिन ये-ये मुझसे असावधानी हो गई। मेरी असावधानी से गलती हो गई इस शब्द का प्रयोग करना आजकल साधारण सी बात हो गयी है। और वो लापरवाही की गलती के बाद हमें पता चलता है कि यह इतना आसान था और कभी-कभी हम अपने आप से पूछते भी हैं कि मुझसे ये गलती कैसे हो गयी! सारे कठिन प्रश्नों को तो मैं बहल का दिया और उसमें इतनी छोटी बात पर मैं ये कैसे ये गलती कर सकती हूँ। इससे ये पता चलता है कि हमारा मन सचेत नहीं था। मन में 2+2=4 लिखने की जगह 2+2=6 लिख दिया। मतलब ये थोड़ी ही है कि हमने पढ़ा नहीं था, ये भी नहीं है कि मुझे आता नहीं था, ये भी नहीं है कि मुझे उस समय याद नहीं आ रहा था, मैंने पढ़ा था लैकिन ये है कि सब कुछ पता होते हुए भी उस समय हमने पता नहीं कैसे लिख दिया। यह हमारी एकाग्रता सावधानी की कमी थी, क्योंकि उस समय मन में चिंता और तनाव था इसलिए मन ने समय पर सही जवाब नहीं दिया। इसलिए अच्छे प्रदर्शन के लिए आजकल सिखाया जाता है कि परीक्षा से एक-दो दिन पहले हमें हल्के और शिथिल होने चाहिए, हमें शांत होना चाहिए, तभी हम अच्छा परिणाम ला सकते हैं।

मान्यता भी हम ही तो बच्चों के अंदर डालते हैं। बच्चा अगर आराम से है, आराम से पढ़ रहा है, माता-पिता कहेंगे कल परीक्षा है और मुझे फिर नहीं है क्यों? क्योंकि उनको बहुत फिर हुई है। हमें अपने आपसे पूछा होगा कि हम क्या कर रहे हैं? यह नहीं है कि परीक्षा कठिन है। उस समय हम क्या कहते हैं हमारे ऊपर दबाव बहुत है, प्रतियोगिता बहुत है या पाठ्यक्रम बहुत है, लैकिन ऐसा नहीं है। मैं सोचती हूँ कि हमने इससे ज्यादा पाठ्यक्रम किये हुए हैं, लैकिन प्रतियोगिता है, लैकिन ये जैसे ही मैं वो प्रतियोगिता में शामिल होती हूँ तो मैं साथ-साथ सुरक्षा की भी आशा करती हूँ। यदि मैं प्रतियोगिता में पास नहीं हुई तो...। मैंने तुरन्त क्या चिन्मित कर लिया, भय। अब जैसे ही मन में भय आया तो स्वाभाविक है कि तनाव भी होगा। परीक्षा देने का कोई भय नहीं होता है, हमें जितना आता है उतना हमें ऐरपूर्वक जबाब देना चाहिए। पिछे हमें भय दिस बात का लगेगा।

हम अच्छा सोचेंगे तो दूसरे भी वैसा ही सोचेंगे

रूपेश भाई: हम बचपन से सुनते आ रहे हैं कि जैसा सोचेंगे वैसा पाओगे, इसमें कितना सत्य है?

सूरज भाई: कई लोग इस बात से परेशान रहते हैं कि लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे? क्या सोचते होंगे? कई लोग तो अनुमान लगा-लगा के ही परेशान हैं ये लोग मेरे बारे में ऐसा-ऐसा सोचते होंगे। अच्छे योग्य व्यक्ति, सफल और ईमानदार व्यक्ति ऐसा सोच कर खुशी को नष्ट करते रहते हैं। हम सबके लिए अच्छा सोचने लगे, सभी हमारे लिए भी अच्छा सोचेंगे। अपने मन में छोटा सा संकल्प रोज़ सवेरे करें कि सभी मेरे गुडफ्रेंड हैं। मैं सभी को बहुत यार करता हूँ / करती हूँ। सभी मुझे यार करते हैं। सभी मेरे बहुत सहयोगी हैं। सबका कल्याण है, सभी बहुत अच्छे हैं और भगवान के बच्चे गुणवान हैं। बस ऐसा सोचेंगे तो दूसरों का सोच यदि गड़बड़ भी है ठीक हो जाएगा।

रूपेश भाई: कोई ऐसा अनुभव बताइए कि किसी के लिए किसी के प्रति मन में कोई दुर्भावना थी और छोटे से प्रयोग से वह पूरी तरह बदल गया हो।
सूरज भाई: ऐसे अनुभव ज्यादातर पति-पत्नी के होते हैं। हर हफ्ते दो-चार बहने ये अनुभव सुनती हैं कि हमारा पति ऐसा था, वैसा था। हमें बुरा बोलता था, तंग करता था। हमने ये अस्यास किए और वे ठीक हो गए, बच्चे भी ठीक हो गए। चम्पकारिक असर हुआ। बात यही थी कि पति जब बुरा बोलता था तो ये सोचती थी कि कैसा खराब व्यक्ति है। सब नेगेटिव फीलिंग उसको जा रही थी तो उसके निगेटिव व्यवहार इनको आ रहे थे जैसे ही इन्होंने अपनी सोच बदली तो दूसरों की सोच भी बदल गई। ये सत्य है कि हमारे संकल्प दूसरों से टकराकर उनके संकल्प को भी ठीक कर देते हैं और फिर वापिस हमारे पास आते हैं।

रूपेश भाई: आध्यात्म जीवन जीने की कला सिखाता है, आपका क्या विचार है।

समर्था-समाधान

ब.कु. सूरज भाई, मेडिटेशन प्रशिक्षक

भी संतुष्ट नहीं होते हैं और मेरे प्रमोशन में भी मुझे ऐसा लगता है कि वो बाधा पैदा करते हैं कैसे मैं उन्हें संतुष्ट करूँ जब वो हर कार्य के लिये मुझे टोकते हैं, रोकते हैं तो फिर मन कई बार उचात सा हो जाता है और हमें अच्छे-बुरे का अच्छे से ज्ञान हो जाता है।

सूरज भाई- राजाजी ने मेल के माध्यम से पूछा है आपमें ज्ञान हो और युक्ति नहीं है तो ज्ञान का कोई मतलब नहीं, युक्ति से क्या आशय है। कैसे इसे जीवन में लाएं?

सूरज भाई: युक्ति का अर्थ है यथार्थ तरीका। युक्ति से मुक्ति। किसी बड़ी समस्या से हम तकाल मुक्त हो सकते हैं। अगर हम ठीक विधि अपना लें तो यह युक्ति के चालाकी को बहुत अच्छा होता है। अब व्यक्ति की यही अभिलाषा होती है लेकिन कई अधिकारी ऐसे होते हैं कि वो ऐसा गलत व्यवहार कर देते हैं कि व्यक्ति काम भी बहुत अच्छा करता है लेकिन जब वो घर जा रहा है तो एक टेंशन और असंतोष लेकर घर जा रहा है। यहाँ मैं इन सभी अधिकारियों या मैनेजर्स को कहूँगा कि सब अपने साथियों को अपनी फैमिली समझे अपने बच्चों तब वो आपके लिये डबल काम करेंगे, और आप तो उनकी समस्याओं को हल करने वाले हो तो वो आपको कहीं समस्या देंगे नहीं बस प्यार से कार्य लेना चाहिए। अब इनको जो कुछ करना है वही विधि जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं। ये सबके साथ-साथ अपने घर से परेशान होगा, परिस्थिति हो गई ये युक्ति हो गई। न ये चालाकी हुई न पाप हुआ लेकिन अपनी श्रेष्ठ इच्छा को पूर्ण करने का एक तरीका हो गया।

रूपेश भाई- राजेश जी का, वो कह रहे हैं भ्राता जी मैं अपने मैनेजर से बहुत परेशान हूँ मैं बहुत कोशिश करता हूँ कि अच्छे से अच्छा कार्य करके उनका हो जाए तो उसको करना हो रहा है जैसे ही इन्होंने अपनी सोच बदली तो मैनुष्य अपनी ट्रांसफर कर दिया करता है उसको जनरल मैनेजर ने डांटा होगा तो वो उस पर उतार देता है सारा, तो ये चलता है दुनिया में ऐसा ही हो रहा है तो इसको क्या करना चाहिए देखो जब छोड़ने की तो जरूरत नहीं इससे तो कठिनाइयाँ हो जाती हैं।

-पत्र व्यवहार का पता-

संपादक: ब.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज मीडिया एवं पलिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन-307510, आबू रोड-307510, जिला-सिरोही, राजस्थान
मो.8769830661, 9413

समाज सेवा प्रभाग द्वारा माउंट आबू में राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

अच्छे समाज निर्माण के लिए जीवन में जरूरी है मानवीय मूल्य व आध्यात्म: जैन

शिव आमंत्रण, आबू रोड़। मूल्य और आध्यात्म को अगर हम जीवन में धारण करें तो ही सुख, शांति और स्वस्थ रह सकते हैं। यदि अच्छा समाज बनाना है तो उसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में नैतिक मूल्य और अध्यात्म अपनाने की जरूरत है।

यह बात ब्रह्माकुमारीज संस्थान शांतिवन परिसर में समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में दिखी से आये स्वास्थ मंत्री श्री सत्येन्द्र जैन ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अपने मन को अगर हम दूसरों के लिए समर्पित करेंगे तो ही हमारे जीवन में मूल्य और आध्यात्म आ सकता है। मूल्य और आध्यात्म से ही हम स्वस्थ और सुन्दर जीवन जी सकते हैं। आज हर किसी को मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। मूल्य और आध्यात्म की शिक्षा का सच्चा ज्ञान हमें ब्रह्माकुमारीज संस्था पूरे पूरे विश्व में फैला रही है। चिंता व्यक्त करते हुए



कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते अंतिथि।

कहा कि आज समाज सेवा का भी रूप बदल गया है लोग कहीं ना कहीं स्वार्थवश भी सेवा का नाम दे देते हैं। इन चीजों से बचने की जरूरत है।

ब्रह्माकुमारीज संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगीनी दादी रत्नमोहिनी ने कहा की स्वयं की कर्मी से आज हर कोई में बुराइयाँ और तनाव बढ़ाता जा रहा है, जिसके कारण आज मनुष्य में लालच, इंधा, कोध जैसी बुराइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। जिसको सिर्फ आध्यात्मिक ज्ञान के

खुद को परमात्मा से जोड़े तो परमात्मा पिता के सारे ज्ञान, गुण और विशेषताएँ स्वयं में आने लगेगी।

महाराष्ट्र के पूर्व वित्तमंत्री हर्ष वर्धन पाटिल ने कहा कि आज समाज में मूल्यनिष्ठ शिक्षा और आध्यात्म की कर्मी से आज हर कोई में बुराइयाँ और तनाव बढ़ाता जा रहा है, जिसके कारण आज मनुष्य में लालच, इंधा, कोध जैसी बुराइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। जिसको सिर्फ आध्यात्मिक ज्ञान के

महासचिव बीके निर्वेंट ने लोगों से अपील की कि किसी भी हालत में समाज की व्यवस्था को बिगड़ने ना दें। सभी को मिलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित करें और एक मूल्यनिष्ठ समाज के बारे में विचार करना चाहिए। परमात्मा का अवतरण ही इस महान कार्य के लिए हुआ है। समाज के लोग हमें देख कर स्वयं ही धारण करने लगेंगे। वेपाल से आये नेपालीज आर्मी इंस्टीट्यूट के वाइस प्रीस्टीपल डॉ. तारा मन अमात्य, प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके अमीरचन्द्र, राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेट बीके प्रेम ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन समाज सेवा प्रभाग की बीके बन्दना ने किया। मुख्यालय को-ऑर्डिनेट बीके अवतार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। हम सभी मूल्यों को अपने जीवन में धारण करेंगे तो एक बेहतर भविष्य बना सकते हैं।

प्रकृति में छिपे अमूल्य उपहार कर सकते असाध्य रोगों को ठीक

शिव आमंत्रण, बागलकोट। कर्नाटक के बागलकोट में राष्ट्रीय आयुर्वेदिक दिवस के अवसर पर आयुष औषधालय और ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वाधान में कार्यक्रम हुआ जिसमें जिला पंचायत की अध्यक्षा वीना कशपनावर, जिला आयुष अधिकारी महेश गुप्तारी एवं आयुष विभाग के डॉक्टरों के अलावा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके पद्मा पुष्प रूप से शामिल थी। कार्यक्रम में बताया गया, कि यह शरीर प्रकृति की देन है और शरीर को स्वस्थ रखने के लिये प्रकृति ने हमें कई औषधियाँ भी दी हैं जिनका सेवन करने से हम कई प्रकार की बीमारियों से बच सकते हैं। यदि हमें इनका ज्ञान हो जाये तो हम बीमारियों के साथ - साथ विदेशी दवाओं के सेवन से भी मुक्त हो सकते हैं व देश के आर्थिक विकास में मदद भी कर सकते हैं। बीके वीना ने कहा, कि हमें शरीर को स्वस्थ रखने के साथ - साथ मन को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाने के लिये गण्य पूरा करने का संकल्प है।



डिवाइन रिट्रीट सेंटर के वार्षिकोत्सव में दीप प्रज्वलन करते अंतिथि।



कार्यक्रम में हजारों की संख्या में उपस्थित लोग।

के फिनैन्स कमिशन के मेंबर सी.एस.मिश्रा, ओडिशा के पूर्व मंत्री डॉ. अरविंद ढाली, मधुमेह रोग विशेषज्ञ बीके डॉ. श्रीमंत कुमार साहू, उपर्युक्त अमिया पटनायक, कटक सबजोन प्रभारी बीके कमलेश, भुवनेश्वर सबजोन प्रभारी बीके लीना, बीके नाथमल, बीके कुलदीप समेत कई वरिष्ठ बहनों ने शिरकत की और मौजूद थे। कार्यक्रम में म.प्र. सरकार



प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीवी सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।

Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

सलाहकार संपादक: प्रो. कमल दीक्षित संपादक: ब्र.कु. कोमल, संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्येन्द्र। आरजेएचआईएन/ 2013/53539

अंतराष्ट्रीय समाचार

आश्रितों के साथ बांटे खुशियों के पल



अनुभूति रिट्रीट सेंटर में नृत्य करते कलाकार।

शिव आमंत्रण, सेंक्रामेंटो। यूएसए में कैलीफोर्निया के अनुभूति रिट्रीट सेंटर पर दीपावली पर आयोजित कार्य में 200 लोगों ने शिरकत की। जिसमें वेस्टकोस्ट अमेरिका की डायरेक्टर बीके चांदू रिट्रीट सेंटर की सीनियर राजयोगी टीचर बीके हेमा और प्रोग्राम डायरेक्टर बीके एलिजाबेथ ने राजयोग मेंटिंग के द्वारा पूरे जीवन को रौशन करने की बात कही। उत्तरी कैलीफोर्निया के जंगलों में लाली आग की वजह से काफी नुकसान हुआ है। करीब 7 हजार घर और इमारतें इस आग में खाक हो गए हैं। ऐसे में कई परिवार ऐसे हैं जो इस समस्या के चलते अनुभूति रिट्रीट सेंटर पर ठहरे हुए हैं जिनके लिए प्रतिदिन

राजयोग क्लासेस कराई जाती है। इस दिवाली के खास मौके पर सभी को सदस्यों ने खुशहाल जीवन की शुभकामनाएं दी। वहीं अगले दिन रिट्रीट सेंटर पर नृथि बे फायर सर्विस मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमें दब बे एरिया इंडियन एसोसिएशन तथा अन्य धर्मों के लोग मौजूद थे।

35 देशों ने की अहिंसा सिद्धांत पर चर्चा



युवों में चर्चा के लिए उपस्थित 35 देशों के प्रतिनिधि।

शिव आमंत्रण, जिनेवा। यूनाइटेड नेशन, जिनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर कार्य में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विजन और सिद्धांत अहिंसा को पूरी दुनिया में प्रचार प्रसार के लिए चर्चा की गयी। संयुक्त राष्ट्र संघ के जेनेवा में आयोजित इस सम्मेलन में महात्मा गांधी द्वारा अहिंसा को बढ़ावा देने तथा जीवों के प्रति दया भाव पैदा करने के लिए मानवीय मूल्यों को भी उन्होंने जोड़ा था। इस परिचर्चा में अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए चर्चा में जो लोग शामिल हुए। उसमें मुख्य रूप से ब्रह्माकुमारीज संस्थान, जिनेवा में भारत के मंत्री और कांसुल जनरल ऑफ इंडिया साईबल रॉय चौधरी, संयुक्त राष्ट्र संघ में ब्रह्माकुमारीज की प्रतिनिधि वेलेशेने बैर्नर्ड, हिमालय रिसर्च एवं कल्चरल फाउण्डेशन के सेक्रेटरी जकरल प्रे. के. वरीकू, आरएडीडीएचओ मैनेजर आफिसर वीरो दिवावारा मुख्य रूप से उपस्थित रहे। इस कार्य में महात्मा गांधी के विचारों, उनके सिद्धांतों को आमजन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। सम्मेलन में जिनेवा में भारत के मंत्री तथा कांसुल जनरल ऑफ इंडिया शाईबल रॉय चौधरी ने कहा, कि महात्मा गांधी ने केवल कुछ समुदायों के लिए नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए नैतिक मूल्यों को जोड़ने का प्रयास किया। यूनाइटेड नेशन में ब्रह्माकुमारीज की प्रतिनिधि वेलेशेने बैर्नर्ड ने कहा, कि महात्मा गांधी कहते नहीं थे बल्कि करने के दियावारे थे जिससे दूसरों के उपर इसका प्रभाव पड़े। अन्त में सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा और शांति के संदेश को आम जन तक पहुंचाने का एक संकल्प लिया तथा इसे विश्व शांति के लिए महत्वपूर्ण बताया।

मिलपिटास में दीपावली महोत्सव मनाया



यूएसए में भिलपिटास के सिलीकॉन वैली के ब्रह्माकुमारीज द्वारा दीपावली इवेंट का आयोजन किया गया। इसमें 350 से अधिक लोगों ने भाग लिया। कॉर्नेटर बीके कुसुम कई विषयों पर चर्चा की।